आज का पुरुषार्थ 6 April 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आत्मिक शक्तियों की पेहचान और प्रयोग "*

हम सभी के पास है **आत्मिक शक्ति और परमात्म शक्ति।** हम सभी आत्मायें जब इस धरा पर आये तब सम्पूर्ण थे। शक्तियों में सम्पूर्ण, सर्व **खजानों** में सम्पूर्ण, **पवित्रता** में सम्पूर्ण, **सर्वगुणों** में सम्पूर्ण।

धीरे-धीरे हमने अपने शक्तियों को यूज़ किया, फिर खोया। अब **आत्मिक शक्तियाँ** बहुत कम हो गई है। जब आत्मा सम्पूर्ण थी, सभी **गुणों** के स्वरूप थी, तब आत्मा बहुत **शक्तिशाली** थी। **संकल्प** से ही सभी काम चलते थे।

संकल्प हुआ हवा चले, हवा चलने लगती थी। **संकल्प** चला थोड़ी सी बारिश हो, बारिश हो जाती थी।

अब पुनः **संकल्प शक्ति** को, आत्मिक शक्ति को सम्पन्न करना है। **योगवल** से हमारी आत्मिक शक्तियाँ निरंतर बढ़ती रहती है। **बौद्धिक शक्ति** बढ़ती

है। विवेक शक्ति भी बढ़ती है। और वह है सदविवेक ..। सम्पूर्ण ज्ञान बढ़ते , **प्योरीटी** बढ़ती है। यह सभी है आत्मिक शक्ति।

दूसरा है **परमात्म शक्तियाँ।** स्वयं भगवान भी हमारे साथ है। उसकी शक्तियाँ भी हमारे साथ है। उसकी दुआयें भी हमारे साथ है। और उनके **वरदान** भी हमारे साथ है। उनका प्यार भी हमारे साथ है।

परमात्म शक्तियाँ है हमारे साथ और आत्मिक शक्तियाँ भी बहुत भरपूर है। अगर हम इस नशे और खुशी में रहे कि ...

" **मेरा तो एक बाबा** " .... बस एक वल एक भरोसा चाहिए।

" **मेरा बाबा** " .... इस फीलिंग में बहुत अच्छी तरह से स्थित हो जाये कि ...

" **जो भगवान है वो मेरा है** .. जो सर्वशक्तिमान है वो मेरा है .. जो भाग्य-विधाता है वो मेरा है .. जो दुःख हर्ता सुख कर्ता है वो मेरा है "

इस अधिकार के फीलिंग में हम आ जाये। तो हम देखते है हमारे प्यार स्वयं भगवान भी खींचकर इस धरा पर आ जाते है। **वो निराकार से साकार हो**

जाते है। वो अपना सबकुछ हम पर **समर्पित** करने लगते है। वो हम पे क़ुर्बान हो जाते है।

तो हमारे पास यह शक्तियाँ है कि हम निराकार को भी साकार में ले आते है। इसकी शक्तियाँ कहे, या **प्यार का अधिकार** कहे।

अब हम सोच ले जब **साइन्स की शक्ति** इतने बड़े-बड़े चमत्कार कर सकती है तो क्या परमात्म शक्ति और आत्मिक शक्तियाँ बड़े-बड़े चमत्कार नहीं कर सकती?

तो हम सभी समस्याओं को और परिस्थितियों को हल करने के लिए इन दोनों **शक्तियों को प्रयोग करे।**

जैसे विज्ञान के साधनों से गर्मी को सर्दी में और सर्दी को गर्मी में बदला जा सकता है। वैसे ही आत्मिक शक्ति के द्वारा संकल्प शक्ति के द्वारा हम **समस्याओं को भी हल कर सकते है।**

तो स्मृति में ले आये →

" **मैं मास्टर क्रियेटर हूँ और मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ** .. रचनाकार हूँ .. रचना पर मेरा अधिकार है .. रचयिता कभी अपने रचना के अधीन नहीं हो सकता "

जैसे शिवबाबा **न्यूं वर्ल्ड** (New World) क्रियेट करने के लिए नीचे आये है, तो वो इस ओल्ड वर्ल्ड के वायब्रेशन्स के, इसके अशान्ति के, इसके दुःखों के अधीन नहीं हो सकते।

ठीक वैसे ही हम भी **मास्टर क्रियेटर** है। हम भी यहाँ के अपवित्रता के वश नहीं हो सकते। तो हम इन परिस्थितियों को अपने अधीन करेंगे।

और आज सारा दिन इस श्रेष्ठ स्वमान में रहेंगे ...

" **मैं मास्टर क्रियेटर हूँ** .. मैं इस माहौल को चार्ज कर सकते हूँ .. मैं प्रकृति को बदल सकता हूँ .. मै सभी समस्याओं का निवारण कर सकता हूँ "

इस नशे में ...

" मैं मास्टर क्रियेटर हूँ और मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ "

और ग्लोब के ऊपर खड़े होकर, पूर्वज बनकर संसार को सकाश देते रहेंगे। हर घन्टे में एकबार।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org